किस राह पर जाएगी ऊर्जा नीति?

भारत डोगरा

निकट भविष्य में ऊर्जा क्षेत्र की सबसे बड़ी खबर यह हो सकती है कि तुर्कमेनिस्तान के बड़े गैस भंडारों की गैस भारत पहुंचने लगे। इसका माध्यम बनेगी तुर्कमेनिस्तान-अफगानिस्तान-पाकिस्तान-भारत पाइप लाइन जिसे उसके अंग्रेज़ी नाम के संक्षिप्त रूप 'तापी' से बुलाया जा रहा है। संयुक्त राज्य अमरीका की छत्र-छाया में विचाराधीन इस 8 अरब डॉलर की परियोजना के बारे में कूटनीतिक हलकों में चर्चा है कि चारों पार्टनर राज़ी हैं व एशियन विकास बैंक पैसा देने के लिए तैयार है। यदि इन सभी का पूर्ण समर्थन अभी न मिला हो तो भी इसकी संभावना तो बढ़ ही गई है।

1600 कि.मी. की यह प्रस्तावित पाइप लाइन तुर्कमेनिस्तान के दौलताबाद गैस भंडार से आरंभ होकर अफगानिस्तान में हेरात, हेलमंद व कंधार से गुज़रते हुए पाकिस्तान में क्वेटा व फिर मुल्तान पहुंचेगी। वहां से वह भारत में फाज़िल्का की ओर चली जाएगी।

तुर्कमेनिस्तान के गैस भंडार बहुत विशाल बताए जा रहे हैं व तापी के मार्ग में थोड़ा बहुत फेर-बदल कर इसे तुर्कमेनिस्तान, उज़बेकिस्तान व अफगानिस्तान के अन्य गैस भंडारों से भी जोड़ा जा सकता है। इतना ही नहीं, इस पाइप लाइन की एक अन्य शाखा क्वेटा से ग्वादर के बंदरगाह की ओर से भी बढ़ सकती है ताकि वहां से गैस युरोप तक भी भेजी जा सके।

इस पूरे प्रकरण में एक दिलचस्प बात यह भी कही जा रही है कि वर्ष 1990 के दशक में तापी जैसी परियोजना को यूनोकल बहुराष्ट्रीय कंपनी ने आगे बढ़ाया था, व उस समय अफगानिस्तान के वर्तमान राष्ट्रपति करज़ई यूनोकल में ही काम करते थे।

तापी परियोजना को सभी सहयोगी देशों के लिए लाभप्रद बताया जा रहा है। तुर्कमेनिस्तान को गैस बेचने के नए अवसर मिलेंगे। अफगानिस्तान को अपने क्षेत्र से गैस भेजने की काफी मोटी फीस मिलेगी। भारत व पाकिस्तान की ऊर्जा कमी दूर होगी।

इन दावों के बावजूद ऊर्जा विशेषज्ञों के बीच इस बारे में मतभेद है कि ऊर्जा क्षेत्र की बदलती स्थितियों में इस तरह की विशाल पाइप लाइन योजनाओं पर अधिक निर्भरता स्थापित करना कितना उचित है।

एक चिंता तो यह है कि अफगानिस्तान और पाकिस्तान के हिंसा व तनावग्रस्त क्षेत्रों से गुज़रने वाली पाइप लाइन भारत तक नियमित गैस पहुंचाने में कितनी सक्षम होगी? खैर, इस समस्या को तो सुलझाया जा सकता है पर इस तरह की पाइप लाइनों की उपयोगिता पर कुछ अधिक बुनियादी सवाल भी उठाए जा रहे हैं।

जिस जलवायु बदलाव के दौर से हम गुज़र रहे हैं, उसमें ऊर्जा नीति पर निरंतर दबाव है कि फॉसिल या जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम हो व अक्षय ऊर्जा स्रोतों की भागीदारी बढ़े। जहां तक अपने देश के जीवाश्म ईंधन यानि कोयला, तेल, गैस का सवाल है तो उसका उपयोग तो करना ही है। पर इस बारे में प्रश्न उठने लगे हैं कि वर्षों तक किसी एक जगह से बड़े पैमाने के आयात के बारे में निश्चित समझौता किया जाए या नहीं। यदि तापी पाइप लाइन जैसे समझौते होते हैं, जो वर्षों भारी मात्रा में गैस का आयात सुनिश्चित कर लेंगे, तो इसका एक असर यह हो सकता है कि अक्षय ऊर्जा स्रोतों पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जाएगा।

परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के मुख्य आयातक के रूप में भी इन दिनों भारत अन्तर्राष्ट्रीय ऊर्जा क्षेत्र में चर्चित है। इस तरह भारत ऊर्जा आपूर्त्ति के ऐसे स्रोत की ओर प्रतिबद्ध होता जा रहा है जो अधिक खतरनाक हैं या पर्यावरण की दृष्टि से अधिक हानिकारक हैं। नीतिगत स्तर पर हमें ऐसे बदलाव चाहिए जो हमें उन ऊर्जा स्रोतों की ओर ले जाएं जो पर्यावरण की रक्षा के अधिक अनुकूल हों। इसके साथ ही ऊर्जा संरक्षण पर भी अधिक ध्यान देना होगा। यदि यह राह समय पर अपनाई गई तो इसके महत्त्वपूर्ण आर्थिक लाभ भी मिल सकते हैं क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ग्रीनहाऊस गैस का उत्सर्जन कम करने वाली तकनीकों को कई तरह की सहायता मिलने की उम्मीद है।

अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण संगठन ग्रीनपीस ने अपने हाल के अभियानों में बताया है कि अक्षय ऊर्जा स्रोत केवल पर्यावरण की दृष्टि से उपयोगी ही नहीं है अपितु दूर-दूर के गावों में संतोषजनक ऊर्जा उपलब्ध करवाने में भी उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका भी हो सकती है। इस दृष्टि से देखें तो भारत में विकेंद्रित अक्षय ऊर्जा की विशेष उपयोगिता बिजली संकट से निरंतर जूझते गांववासियों के लिए है। ***(स्रोत फीचर्स)***

फॉर्म 4 (नियम - 8 देखिए)

मासिक स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बंध में जानकारी

प्रकाशन	: भोपाल	सम्पादक का नाम	: सुशील जोशी
प्रकाशन की अवधि	: मासिक	राष्ट्रीयता	: भारतीय
प्रकाशक का नाम	: (सी.एन. सुब्रह्मण्यम) निदेशक, एकलव्य	पता	: एकलव्य, ई-7/एच आई जी 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462 016
राष्ट्रीयता	: भारतीय		
पता	: एकलव्य, ई-7/एच आई जी 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462 016	उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है	: (सी.एन. सुब्रह्मण्यम) निदेशक, एकलव्य
मुद्रक का नाम	: (सी.एन. सुब्रह्मण्यम) निदेशक, एकलव्य	राष्ट्रीयता	: भारतीय
राष्ट्रीयता	: भारतीय	पता	: एकलव्य, ई-7/एच आई जी 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462 016
पता	: एकलव्य एकलव्य, ई-7/एच आई जी 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462 016		

मैं सी.एन. सुब्रह्मण्यम, निदेशक, एकलव्य यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

1 जनवरी 2011

सी.एन. सुब्रह्मण्यम,
निदेशक, एकलव्य